प्रश्न — पद्मावत की प्रेम पद्धति

उत्तर — जायसी ने पद्मावत में जिस प्रेम पद्धति का निरूपण किया है वह मूलतः सूफियों की प्रेम-मूलक साधना पद्धति पर आधारित है। सूफी साधक ईश्वर के प्रेम में भी अपनी आत्मा की आलोक देखता है। वह उस परम प्रेममय परमात्मा के नाम-स्मरण और ध्यान में दीवाना बना रहता है। और संसार के समस्त ऐश्वर्य को उस प्रेम रूप की मुहब्बत में पाता है —

" बेहिसाबी यह कि हर अर्श में जलवा आ मिजाज

फिर भी यहाँ यह कि सूरत आज तक देखी नहीं

जायसी सूफी थे। वे प्रेम पद्धति को ईश्वर-प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन मानते थे। पद्मावत में उन्होंने अनेक स्थलों पर प्रेम की महत्ता का वर्णन किया है जैसे —

तीनि लोक चौदह खंड सबै परै मोहि सूझ।
प्रेम छाँडि नहि लोन किछु, जो देखा मन बूझि॥

तथा —

मनहि प्रेम है कठिन दुहेला। दुइ जग तरा प्रेम जेहि खेला।

और "प्रेम पंथ जो पहुँचे पारा। बहुरि न मिलै आइ एहि छारा"

जायसी प्रेम को इतना महत्व देते हैं कि उनके अनुसार जिस व्यक्ति ने इस संसार में आकर प्रेम के सरल साधन द्वारा अपने हृदय — ईश्वर की प्राप्ति नहीं की उसका जन्म लेना ही व्यर्थ रहा —

" जो नहि सीस प्रेम पथ लावा, सो पृथिमी में काहे आवा"

नागमती रत्नसेन के प्रति अपने प्रेम की

अभिव्यक्ति करती हुई इस परम प्रेममय स्थिति को ही सर्वत्र देखती है —

"मैं जानेउँ तुम्ह मोही माहाँ। देखौं ताकि तौ हौ रूप जोहा"

तुम्ह सौं रतन कोउ न जीता, हारे बररुचि गोरख
पण्डितौं आपु गई रखौंव, करैं तुम्हार सों खोजा

पद्मावती भी इसी परम प्रेममय की प्रतीक है —

"जग कोइ दीठि न आवै, आछहि नैन अकास।
जोगी जती सन्यासी, तप साधहिं तेहि आसा"

जायसी स्थान-स्थान पर सर्वत्र प्रेमास्पद को ही इस परम प्रेममय ब्रह्म का प्रतीक बनाते चले गए हैं। नागमती के लिए रत्नसेन गुरु के समान सर्वव्यापी है और रत्नसेन के लिए पद्मावती तथा आगे चल कर पद्मावती के लिए रत्नसेन ब्रह्म का प्रतीक बन जाता। पद्मावत की रचना में जायसी का मूल उद्देश्य प्रेम की ~~महत्व~~ महत्ता का ही चित्रण करना था। उन्होंने इस महत्ता का चित्रण लौकिक प्रेम कथा के माध्यम द्वारा किया है और ऐसा करते समय उन्होंने भारतीय रूढ़ियों का प्रचुरता के साथ प्रयोग कर अपनी इस कथा को व्यापकता प्रदान की। इसलिए हमें प्रेम पद्धति का विवेचन करने से पूर्व जायसी द्वारा प्रयुक्त प्रेम कथा के विधानों का परिचय प्राप्त करना है।

प्रेम कथा के विधान →

प्राचीन प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रेम कथा के अनेक विधानों के दर्शन होते हैं। अधिकांश प्रेम कथाओं में पात्रों के हृदय में प्रेम का अंकुर उत्पन्न करने का कार्य प्रायः पक्षियों द्वारा किया जाता है।

नल दमयन्ती की कथा में यह कार्य पक्षीराज हंस ने किया था परन्तु साधारणतः तोता (शुक) यह कार्य ही करता रहा है। 'पृथ्वीराज रासो' में तोता यह कार्य को करता है। जायसी ने भी हीरामन तोते को ही अपना माध्यम बनाया है।

प्रेम कथाओं में दूसरा विधान होता है- प्रेमी-प्रेमिका का प्रत्यक्ष मिलन। कभी यह मिलन आकस्मिक होता है और कभी सकारण। तुलसी ने जनक की पुष्पवाटिका में राम और सीता का आकस्मिक प्रथम मिलन दिखाया है परन्तु जायसी ने सकारण और पूर्व निश्चित योजनानुसार शिव मंडप में रत्नसेन और पद्मावती का प्रथम मिलन दिखाया है।

अधिकांश भारतीय प्रेम कथाओं में नायक के प्रेम की परीक्षा लेने का भी विधान प्रचलित रहा है। प्राचीन कथाओं में प्रेम की अधिक उत्कटता दिखाने के लिए विवाह या मिलन के उपरान्त प्रेमी प्रेमिका को वियुक्त करवा कर पुनः उन्हें मिला देने का विधान रहा है। अन्य विधानों में युद्धों का प्रसंग, सपत्नियों का विवाद, पुत्र जन्म आदि का वर्णन होता है। जायसी ने इन सभी प्रसंगों के प्रति पूर्ण सतर्कता दिखायी है।

डॉ० जायदेव के अनुसार — इस प्रकार की प्रेम कथाओं में तीन और आवश्यक विधान थे —

1. षट्ऋतु वर्णन 2. नखशिख वर्णन
3. बारहमासा वर्णन, जायसी ने इन तीनों विधानों का भी पूर्ण उपयोग किया है

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है। जायसी ने अपनी प्रेम कथा में अन्य पूर्ववर्ती एवं समकालीन प्रचलित प्रेम कथाओं में प्रयुक्त कथानक रूढ़ियों को अपना कर पद्मावत का निर्माण किया है। अतः पद्मावत की रचना दृष्टि से एक सफल प्रेम कहानी माना जा सकता है।

प्रेम पद्धति — शुक्ल जी ने पद्मावत की प्रेम पद्धति का निरूपण करने से पूर्व भारतीय साहित्य में प्रचलित चार प्रमुख प्रेम प्रणालियों का परिचय दिया है जो इस प्रकार है—

1. रामायण आदि महाकाव्यों की वह प्रेम जिसका प्रादुर्भाव विवाह के उपरान्त तथा उत्कर्ष जीवन की विकट परिस्थितियों में होता है।
2. नायक नायिका एक दूसरे को देख मोहित हो जाते हैं और फिर उनमें प्रेम की वृद्धि होती है। इस का अन्त विवाह में होता है। प्रयत्न नायक की ओर से अधिक किया जाता है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् का प्रेम ऐसा ही है।
3. यह राजाओं के अन्तःपुर का प्रेम होता है जिसमें रानियों के द्वेष, विदूषक आदि के हास परिहास और राजाओं की लम्पटता का वर्णन अधिक होता है। नायक बाहर न जाकर घर में ही लुकता छिपता है। रत्नावली, कर्पूरमंजरी आदि नाटिकाओं में इसी प्रकार के प्रेम का प्रदर्शन है।
4. यह प्रेम गुण श्रवण, चित्र दर्शन, स्वप्न दर्शन आदि से घर बैठे विकसित हो जाता है। उषा – अनिरुद्ध का प्रेम इसी प्रकार का है

पद्मावत में जायसी द्वारा वर्णित प्रेम-पद्धति प्रकार का है। जायसी ने पद्मावत में मुख्यतः दाम्पत्य प्रेम का ही उत्कर्ष दिखाया है। पद्मावती पक्ष में पूर्वराग का उदय, पद्मावती सुआ, और स्वप्न से माना जा सकता है वहीं कवि कहते हैं—

"सुनि कै बानि जरी आसकाया मन भा भयन
नी हियरे मैं भया।।"

आगे चलकर देवीत मंडप में योगी-दर्शन के पश्चात पद्मावती के प्रेम की तीव्रता हो जाती है। "पद्मावति जस सुना बखानू, सहस करा देखेसि तस भानू"।।

पद्मावती के प्रेम का विकास गन्धर्वसेन-मंडप में जाकर होता है। यहाँ पर प्रेम मिलन न होकर दोनों पक्षों में सम हो जाता है। रत्नसेन पद्मावती के लिए सुग्गा का प्रेम अत्यंत कोमल निमित्त है।

जायसी का यह प्रेम मार्ग ऊपर से देखने पर तो सहज सा प्रतीत होता है परन्तु इसे अनायास ही नहीं प्राप्त किया जा सकता। इसके लिए अनेक साधनों की आवश्यकता पड़ती है। गुरु इसका मूल मंत्रदाता होता है। गुरु-कृपा से ही शिष्य के हृदय में प्रेम का उदय होता है—

"गुरु बिरह चिनगी जो मेला, जो सुलगाइ
लेइ सो चेला"।

इस प्रकार जायसी ने पद्मावत में अपनी प्रेम पद्धति का सरल मार्मिक निरूपण किया है जो स्वाभाविक हुआ और विशेषताओं की पराकाष्ठा आपकता है।

वर्णित PB सिद्धांत सरल मार्ग की मिश्र
पर, चलकर उस परम प्रेमानन्द को
प्राप्त किया जा सकता है। सैद्धांतिक
रूप से यह प्रेम मार्ग सरल प्रतीत,
होता है परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से
यह सर्वसाधारण के लिए सुलभ
नहीं होता।

जायसी प्रेम के अमर
चितेरे हैं। उन्होंने प्रेम के दोनों
पक्षों संयोग और वियोग का
विशद चित्रण किया है॥

The End